ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष 39, अंक 22 एक प्रति : 10 रुपये
सोमवार 4 अप्रैल, 2016 से रविवार 10 अप्रैल, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द: 193 वार्षिक शुल्क: 250 रुपये पृष्ठ 12
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

होली के शुभ अवसर पर
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में एवं दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से

आर्य परिवार

होली मंगल मिलन

होली के दिन

हर घर पर लहराये ओ३म् ध्वज
आर्य समाज का संकल्प

38 दिन के बालक से 95 वर्ष के वरिष्ठ आर्यों का मिलन पर्व बना

शहीद दिवस के अवसर पर प्रस्तुत नाटिका देखकर नेत्र हुए अश्रुपुरित

बच्चों ने दी आर्य समाज के कार्यों की जानकारी

समारोह के अवसर पर अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान

बच्चों के लिए 6 नई कॉमिक्सों का हुआ लोकार्पण

डॉ. राजसिंह आर्य स्मृति सम्मान प्राप्त करते स्वामी सुधानन्द जी।

सांसद मनोज तिवारी जी को स्मृति चिह्न देकर सम्मान।

डॉ. सत्यपाल सिंह जी का स्वागत करते श्री राकेश ग्रोवर जी

श्रीमती किरण चोपड़ा जी का स्वागत करती श्रीमती मृदुला चौहान जी

लाला लाजपत राय जी के परिजनों पौत्रवधु श्रीमती रविभूषण राय, प्रपौत्री श्रीमती अनिता एवं श्री आदर्श गोयल जी का स्वागत

श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी का स्वागत करते श्री विश्वामित्र डुकपाल जी

स्वामी सम्पूर्णानन्द जी का स्वागत करते डॉ. विश्वराम रामविलास जी

साध्वी उत्तमायति जी का स्वागत करती श्रीमती ऊषा किरण आर्या जी

श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी का स्वागत करते श्री ओमप्रकाश गोयल जी

महाशय जी का स्वागत करते श्री योगेश मुंजाल जी

विपणित आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में भाग लेने की प्रेरणा करता श्री ओमपाल सिंह परिवार

95 वर्षीय बुजुर्ग का सम्मान करते श्री महेन्द्र सिंह

38 दिन के सबसे छोटे बच्चे को आशीर्वाद

बच्चों द्वारा योजनाओं एवं कार्यक्रमों की जानकारी

मा. सुविज्ञ आर्य, कु. नन्दिनी आर्या, कु. युक्ति राजपूत, कु. दिव्यांशी, कु. वान्या, मा. वैभव आर्य, कु. अंकिता, कु. स्वस्ति आर्या, कु. रितिका, मा. शौर्य आर्य एवं कु. अनन्या सेठी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में दिल्ली के समस्त आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं के सहयोग से

14वां आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह

नये उत्साह एवं नये कार्यों के साथ सम्पन्न

लाला लाजपत रायजी को श्रद्धांजलि देना हमारे परिवार के लिए गौरव का विषय -रविभूषण राय

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में होली के पावन पर्व पर गत वर्षों भांति की इस वर्ष भी समस्त आर्यसमाज की ओर से 14वें होली मंगल मिलन का भव्य आयोजन 23 मार्च 2016 को रघुमल आर्य कन्या सीनियर सेकेंड्री स्कूल,राजाबाजार, कनॉट प्लेस, दिल्ली स्थित सायं 3.30 बजे से आचार्या नन्दिता शास्त्री जी वाराणसी जी के ब्रह्मत्व में पाणिनी कन्या गुरुकुल महाविद्यालय वाराणसी की ब्रह्मचारिणीयों के समधुर वेदपाठ में नवसस्येष्टि यज्ञ से आरम्भ हुआ।

इस अवसर पर श्रीमती ललतेश एवं श्री नरेश चन्द्र गुप्ता जी, श्रीमती प्रीतिका एवं श्री विवेक गुप्ता जी, श्रीमती नेहा एवं मोक्ष मेहतानी जी, श्रीमती श्रुति एवं श्री हिमाशु गोयल जी, श्रीमती रूचि एवं श्री सुधाकर आर्य, श्रीमती सीमा एवं श्री अभिषेक आर्य, श्रीमती सोनम एवं श्री आशुतोष आर्य जी यजमान के रूप सपरिवार इष्टमित्रों सहित उपस्थित हुए और श्रद्धाभावना के साथ अपनी आहुतियां प्रदान की। सभी यजमान परिवारों को मंच पर आमन्त्रित करके परिचय कराया गया एवं यज्ञ किट प्रदान की गई।

कार्यक्रम स्थल - आर्य पब्लिक स्कूल के मुख्य द्वार को तोरण द्वारा के रूप में सजाया गया था जहां सभा अधिकारी श्री सुखबीर सिंह आर्य जी, श्री ओम प्रकाश आर्य जी, आर्य महिलाएं, बच्चे समस्त आगन्तुकों को चंन्दन का तिलक लगाकर एवं इत्र छिडककर होली की शुभकामनाएं देते हुए अपना आसन ग्रहण करने के लिए प्रेरित कर रहे थे।

आजका होलिकोत्सव - अन्य उत्सवों से भिन्न था। कारण - 23 मार्च शहीदी दिवस भी था। अत: कार्यक्रम में देशभक्ति का पुट देखने को मिला। जहां हास्य, मस्ती, रंग तरंग का रसिक वातावरण था वहां देशभक्तिपूर्ण प्रस्तुतियों एवं काव्य पाठ से पूरा पण्डाल बीच-बीच में भारत माता की जय - वन्दे मातरम् के उद्घोषों से गुंजायमान हो रहा था।

इस वर्ष मुख्य विशेषताओं में से एक था - मंच संचालन। आर्यसमाज की बाल प्रतिभाओं को मंच पर आकर कार्यक्रम एवं सभा की योजनाओं की जानकारी प्रसारित करना। दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे इन बच्चों ने न केवल सभा के कार्यों एवं योजनाओं को जाना अपितु समस्त उपस्थित आर्यजनों की जानकारी के लिए अपनी मीठी आवाज से प्रसारित भी किया। इसके अन्तर्गत मा. सुविज्ञ ने हवन, कु. अंकिता आर्या ने प्रेयर मन्त्र, कु. नन्दिनी ने सत्यार्थ प्रकाश, कु. वान्या ने आर्य भजनावली, मा. शौर्य आर्य ने आर्य लोकेटर, कु. दिव्यांशी आर्या ने भटके नौजवान, कु. रीतिका आर्या ने साप्ताहिक सत्संग, मा. वैभव आर्य ने आर्य वीर दल, कु. युक्ति राजपूत ने आर्य वीरांगना दल, कु. अनन्या सेठी ने ई-कॉमर्स, कु. स्वस्ति आर्या ने विवाह सम्बन्ध सेवा (आर्या मैट्रोमोनी), मा. अभिनन्द आर्य ने जातिवाद, कु. अक्षिता तनेजा ने विश्व पर्यावरण दिवस, कु. श्रुति आर्या ने महाशय जी के 93वें जन्मदिवस एवं कु. यज्ञिका आर्या ने होली के सम्बन्ध में जानकारी प्रस्तुत की।

इस शुभ अवसर पर सभा के अन्तर्गत संचालित विभिन्न आर्य विद्यालयों एवं गुरुकुलों सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से आर्यजनों का मनोरंजन किया अपितु देशभक्ति प्रस्तुतियों से नया जोश भी उत्पन्न किया। प्रस्तुति देने वाले संस्थानों में वैदिक शिक्षा केन्द्र, प्रीत विहार ने " ऐसे हों हमारे आर्यसमाज ....", महर्षि दयानन्द आर्य पब्लिक स्कूल, शादीखामपुर के छात्रों ने " हम हैं छोटे बच्चे....", कन्या गुरुकुल सैनिक विहार, दिल्ली की बालिकाओं ने " हे प्रभु हम तुमसे वर पावें...", महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल न्यू मोती नगर ने " देश रंगीला ...", अखिल भारतीय दयानन्द सेवा श्रम संघ की बालिकाओं ने "असमी लोक गीत - थाली नृत्य", आर्य वीर दल प्रीत विहार के आर्यवीरों ने " लाला लाजपत राय एवं शहीद भगत सिंह से सम्बन्धित नाटिका", आर्य गुरुकुल रानी बाग के छात्रों ने "जय हो....", कु. नन्दिनी आर्या ने नाटिका के माध्यम से 'हर -घर ओम् ध्वज का संकल्प' व्यक्त किया। सभी कार्यक्रमों की प्रस्तुति ने उपस्थित समस्त आर्यजनों का मन मोह लिया।

सुप्रसिद्ध कवि डॉ. अर्जुन सिसादिया जी शहीदी दिवस को स्मरण करते हुए ओजपूर्ण वाणी में देशभक्ति रचनाओं का वाचन किया। यह वर्ष अमर शहीद शेर-ए-पंजाब लाला लाजपत राय जी का 150वां जयन्ती वर्ष है। इस अवसर पर लाला जी की पौत्रवधु श्रीमती रविभूषण राय (धर्मपत्नी श्री कुलभूषण राय) एवं उनकी सुपुत्री श्रीमती अनिता गोयल एवं दामाद श्री आदर्श गोयल जी का आर्यसमाज की ओर से परिचय एवं सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। उन्हें शॉल, स्मृति चिह्न, श्रीफल, पीतवस्त्र एवं अभिनन्दन पत्र प्रदान किया गया। अभिनन्दन समारोह में अपना उद्बोधन देते हुए श्रीमती रविभूषण राय जी ने कहा कि आर्यसमाज के मंच पर लालाजी को स्मरण करते श्रद्धांजलि देना हमारे परिवार के लिए गौरव का विषय है। उन्होंने अपने परिवार की ओर से 21000/- रुपये की राशि का सहयोग भी प्रदान किया। इस अवसर पर इस योजना को एक वर्ष तक विस्तारित करने का भी प्रस्ताव पारित किया गया।

इस वर्ष इस समारोह में जहां हमें वैदिक विद्वान एवं सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह जी का उद्बोधन प्राप्त हुआ वहां सांसद, गीतकार एवं अभिनेता श्री मनोज तिवारी जी की देशभक्तिपूर्ण प्रस्तुति ने समां बांध दिया। श्री मनोज तिवारी जी ने कहा कि आर्यसमाज देश के आदिवासी और विशेषत: पूर्वोत्तर के ईसाई बाहुल क्षेत्र में भारतीय संस्कृति को बचाने का जो कार्य कर रहा है उसके लिए मैं आर्यसमाज को नमन करता हूं। उन्होंने कहा कि आसाम-नागालैंड के क्षेत्रों में आर्यसमाज ने अपने कार्यों से अपनी विशेष पहचान बनाई है, जो मुझे वहां जाकर देखने को मिली।

इस अवसर पर आर्यसमाज के वरिष्ठ सदस्य के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी का सार्वजनिक अभिनन्दन एवं सम्मान किया गया। श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी प्रधान बनने के उपरान्त पहली बार सभा के किसी आयोजन में पधारे थे। उन्हें दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से पीतवस्त्र, श्रीफल, शॉल, एवं सम्मान पत्र भेंट किया गया। श्री आर्य जी ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यों एवं गतिविधियों का वर्णन करते हुए इन कार्यों में और गति प्रदान करने के लिए 5 लाख रुपये की राशि का सहयोग प्रदान करने की घोषणा की।

अतिथि रूप में पधारी श्रीमती किरण चोपड़ा जी ने आर्यजनों को होली की बधाई देते हुए कहा कि इस समारोह में आर्यसमाज के ऐतिहासिक महापुरुषों के परिजनों को देखकर कर मन अभिभूत हो रहा है। मैं लाला लाजपत राय जी एवं उनकी पौत्री को नमन करती हूं। मुझे गर्व है कि मैं भी आर्यसमाज के नेता लाला जगत नारायण जी की पौत्रवधु हूं और आर्यसमाज की पौत्रवधु होना मेरे लिए सौभाग्य है।

इस समारोह के जनक के रूप प्रतिष्ठित दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी की अनुभूति को ...शेष पेज 4 पर

अपने आपको आर्य समाज की सदस्या कहलाने में गौरव की अनुभूति हो रही है -किरण चोपड़ा

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य का हुआ सार्वजनिक सम्मान

बच्चों द्वारा प्रस्तुत लाला लाजपत राय के जीवन पर आधारित नाटिका देख दर्शक हुए भाव-विभोर

यज्ञ प्रशिक्षण कक्षा 5 जून से होंगी आरंभ

नागालैण्ड और असम में आर्य समाज की संस्थाओं द्वारा किये जा रहे कार्यों से आर्य समाज को जानने का अवसर प्राप्त हुआ -मनोज तिवारी, सांसद

प्रत्येक घर में ओ३म् ध्वज लगाने का संकल्प

घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ योजना को मिला एक वर्ष का विस्तार

बच्चों ने दी आर्य समाज के कार्यों एवं योजनाओं की जानकारी

8 मई से प्रति रविवार संचालित होगी संस्कृत शिक्षण कक्षा

7 मई 2016 से प्रति शनिवार आरंभ होगी मंत्र पाठ कक्षा

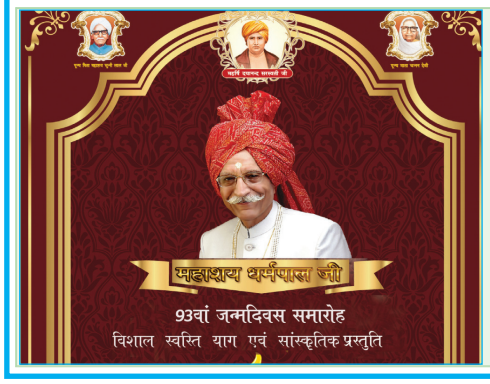

महाशय धर्मपाल (एम.डी. एच.) का 93वां जन्मोत्सव बड़े धूमधाम के साथ सम्पन्न। जन्मोत्सव की विस्तृत रिपोर्ट व चित्रमय झांकी अगले अंक में अवश्य देखें।

-सम्पादक

पृष्ठ 3 का शेष दिल्ली आर्य प्रतिनिधि ...

स्थाई रखने के लिए आरम्भ किया गया ब्र. राजसिंह आर्य स्मृति सम्मान इस वर्ष उडीसा के आदिवासी क्षेत्रों में वैदिक धर्म का प्रचार करने वाले स्वामी सुधानन्द जी को उनकी सेवाओं के लिए समर्पित किया गया। इस अवसर पर उन्हें माला, पीतवस्त्र, प्रशस्ति पत्र, श्रीफल एवं 51000/- रुपये की सम्मान राशि से सम्मानित किया गया।

होली मंगल मिलन समारोह पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रत्येक वर्ष कुछ योजनाओं की घोषणा करती है। इस वर्ष हर घर ओ३म् ध्वज लगाने का संकल्प व्यक्त करते हुए आर्यजनो को इसमें बढ़चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया गया। आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से बच्चों के लिए प्रकाशित छह नई कॉमिक्सों का लोकार्पण किया गया। कॉमिक्स लोकापर्ण स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, स्वामी सुधानन्द जी, साध्वी उत्तमा यति जी के कर कमलों से कराया गया।

इस कार्यक्रम में सांस्कृतिक कार्यक्रम को सफल बनाने में श्रीमती सरोज यादव, श्रीमती वीना आर्या, श्रीमती अनिता चौहान जी (महर्षि दयानन्द आर्य पब्लिक स्कूल, शादीखामपुर) का योगदान रहा।

महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने सभा द्वारा संचालित विभिन्न सेवाओं की जानकारी दी। यह जानकारी स्क्रीन पर भी प्रदर्शित की जा रही थी। इनमें मुख्यत: प्रेयर मन्त्रा, आर्या लोकेटर, ई कामर्स, आर्यसन्देश पत्रिका, आर्य मैट्रीमोनी, उर्दू सत्यार्थ प्रकाश, आदि जानकारियां थी। उन्होंने बताया कि सभा इस वर्ष से वेद स्वाध्याय हेतु संस्कृत कक्षा, मन्त्र पाठ कक्षा, यज्ञ प्रशिक्षण कक्षाओं का संचालन करने जा रही है। जोकि अलग-अलग स्थानों पर सायं 5 से 7 बजे तक संचालित की जाया करेंगी। समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के माननीय प्रधान डॉ. रामबिलास जी एवं न्यूजीलैंड से पधारे श्री प्रकाश राय जी उपस्थित थे। समारोह में उपस्थित होने एवं कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए दिल्ली आर्य समाज की ओर से उन्हें शॉल एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया।

इस शुभ अवसर पर दिल्ली के समस्त आर्यसमाजों के हजारों आर्यजनों, विद्यालयों के छात्र-छात्राओं, क्षेत्र के प्रसिद्ध गणमान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त कई शिक्षण संस्थाओं के आचार्य व आचार्या भी उपस्थित थे। जिनमें प्रमुख व्यक्तियों में श्रीमती किरण चोपड़ा, महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.), डॉ. सत्यपाल सिंह, श्री मनोज तिवारी, श्री बी. रामबिलास, श्री अजय सहगल जी (टंकारा ट्रस्ट), आनन्द कुमार चौहान जी (एमिटि शिक्षण संस्थान), साध्वी उत्तमायती जी (सार्वदेशिक आर्य वीरागना दल), श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी (प्रधान, सार्वदेशिक सभा), श्री ओम प्रकाश गोयल (पानीपत) श्री योगेश मुंजाल जी (चेयरमैन, मुंजाल शोवा लिमि), श्री राकेश ग्रोवर जी (चेयरमैन, ग्रोवर संस), श्री मनोज गुलाटी, एवं लाला लाजपत राय जी की पौत्रवधु श्रीमती रविभूषण राय, उनकी पुत्री श्रीमती अनिता गोयल एवं दामाद श्री आदर्श गोयल जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी, श्री यशपाल आर्य जी, श्रीमती शारदा आर्या, श्रीमती मृदुला चौहान, श्रीमती प्रकाश कथूरिया, आचार्य चन्द्रशेखर, श्री शिव भगवान लाहौटी आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम को सफल बनाने में निम्न महानुभावों का सक्रिय योगदान रहा- सर्वश्री धर्मपाल आर्य(प्रधान) ओम प्रकाश आर्य(उप प्रधान), अरुण प्रकाश वर्मा (मन्त्री), सुखबीर सिंह आर्य (मन्त्री), सुरेश चन्द्र गुप्ता (मन्त्री), वीरेन्द्रसरदाना(मन्त्री), सुरेन्द्र गुप्ता (मन्त्री), विद्यामित्र ठुकराल (कोषाध्यक्ष), रवि चड्डा, रविदेव गुप्ता, संजय कुमार, नरेन्द्र सिंह हुड्डा, कर्नल रवीन्द्र कुमार वर्मा, वीणा आर्या, विभा आर्या, शारदा आर्या, मीनू आर्या, अंजू आर्या, रश्मि आर्या, शालिनी आर्या, अनीता चौहान, ज्योति आर्या, (धर्मपत्नी श्री यश आर्य), सुषमा आर्या, विजेन्द्र आर्य, सुभाष आर्य, नरेश पाल आर्य, संजीव आर्य, एस.पी. सिंह, हर्ष प्रिय आर्य, नीरज आर्य, मनोज (हलवाई), वीरेन्द्र आर्य, रणधीर आर्य, मनीष नरूला, जगवीर आर्य, संजय आर्य, सतीश चड्ढ़ा, अरुण आर्य, बृजेश आर्य, मदन मोहन सलूजा, कंवरभान खेत्रपाल, सत्यपाल आर्य, संजय आर्य (रानीबाग), दिनेश शास्त्री, अशोक मेहतानी, योगेश आर्य, सुरेन्द्र चौधरी, योगेश आर्य सुरेन्द्र रैली, प्रदीप आर्य, कृपाल सिंह, जोगेन्द्र खट्टर, यज्ञदत्त आर्य, अशोक कुमार, भुवनेश्वर सरण (आई.टी.टीम) अनिरुद्ध, रवि प्रकाश, अरविन्द नागपाल, आदर्श जी, महेन्द्र कात्याल, राजेन्द्र दुर्गा, चन्द्र मोहन आर्य, जय प्रकाश शास्त्री, रवीन्द्र पाल सिंह (भाईजी), महेन्द्र कत्याल (वैंडर), अविचल आर्य, अश्वनी आर्य, आशीष आर्य, सन्दीप आर्य, विवेक आर्य, आचार्य ऋषिदेव, राजीव चौधरी। **-संवाद्दाता**

सम्पादकीय

इस्लाम का अर्थ शांति है!!

पिछले हफ्ते सूफी सम्मेलन में शरीक पी.एम. मोदी ने इस्लाम को शान्ति और सद्भाव का धर्म कहा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सूफीवाद को शांति की आवाज बताते हुए कहा कि अल्लाह के 99 नामों में से कोई भी हिंसा से नहीं जुड़ा है जब हम अल्लाह के 99 नामों के बारे में सोचते हैं तो उनमें से कोई भी बल और हिंसा से नहीं जुड़ता। अल्लाह के पहले दो नाम कृपालु एवं रहमदिल है, अल्लाह रहमान और रहीम है। सब जानते हैं प्रधानमंत्री जी बहुत अच्छे वक्ता हैं तो इसमें कोई हैरानी वाली बात नहीं, हैरानी इस बात की है कि प्रधानमंत्री जी ने इस्लाम को शांति का मजहब उस समय बताया जब समूचे मिडिल ईस्ट के साथ यूरोप से एशिया तक इस्लामिक आतंकवाद से पूरा विश्व खून से लथपथ हुआ बैठा है। बेगुनाह लोग जिहाद के नाम पर मारे जा रहे हैं। जिस समय प्रधानमंत्री जी इस्लाम की सहिष्णुता का उपदेश दे रहे थे ठीक उसी समय मुज्जफर नगर के अन्दर शिव चौक पर एक हिन्दू लड़की के साथ हुई छेड़-छाड़ पर अपनी गलती न मानते हुए कुछ लोग पत्थरबाजी कर तमंचे लहराकर अल्लाह-हू-अकबर के नारे लगा रहे थे।

ऐसा नहीं है कि सूफीवाद गलत है, सूफी मुसलमान आज भी उदारवादी हैं, जो इस्लाम को आज भी मोक्ष का मार्ग मानते हैं, जो सूफी परम्पराओं को लेकर आज भी इस्लामिक कट्टरवाद के खिलाफ खड़े हैं। देखा जाये तो इस्लाम के पूरे इतिहास में इस समुदाय में कट्टरपंथी रहे हैं। लेकिन नरमपंथी सूफीवाद ने उन्हें हमेशा पराजित किया है। लेकिन करने की तुलना में यह कहना आसान है कि उदारवादी मुस्लिम आज पहाड़ जैसी चुनौती का सामना कर रहे हैं। सूफी संतो के पास आज भी इस्लाम के प्रचार-प्रसार का पुरातन तरीका है जबकि कट्टरवादी जेहादी मुस्लिम के पास आधुनिक इन्टरनेट का पूरा साजो सामान है। अब उदारवादी मुस्लिम जगत को नई रणनीति के बारे सोचना होगा उन्हें कट्टरवादी मुस्लिमों का चेहरा उनकी विचारधारा को दुनिया के सामने लाकर इसका पर्दाफाश करना चाहिए। ब्रसेल्स पर हुए फिदाईन हमले के बाद अभी पाकिस्तान के अन्दर जमातुल अहरार के एक आत्मघाती हमलावर ने पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की राजधानी लाहौर को खून से रंग दिया। खुद को बम विस्फोट से चिथड़ा कर गुलशन-ए-इकबाल पार्क में ईस्टर मना रहे 70 से अधिक लोगों की भी जान ले ली है। हमले में तीन सौ से अधिक लोग बुरी तरह घायल हुए हैं और इनमें से कुछ जीवन-मौत के बीच झूल रहे हैं। मरने वाले लोगों में अधिकतर ईसाई समुदाय से हैं जिससे प्रतीत होता है कि हमलावर का मकसद धर्म विशेष के लोगों को नुकसान पहुंचाना था। अजीब है निर्दोष मासूम लोगों को मारना, बच्चों, औरतों को जलील कर मारने के बदले जन्नत की सैर सिखाया जाता है। अब समूचे मुस्लिम जगत को इस निस्कर्ष पर जाना होगा क्योंकि पैगम्बर की मौत के बाद 300 साल तक मजहबी पुस्तक का संकलन जारी रहा। उलेमाओं द्वारा कुरान पर निर्विवाद रूप से यकीन करने का फरमान सुनाना, बाहर निकलकर काफिरों को मारने वाली आयतों की आज पुन: समीक्षा की जानी चाहिए?

पैरिस में हुए हमले के बाद जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने ट्वीट किया था कि ''जो लोग मेरे मजहब के नाम पर हत्या करते फिरते हैं, मुसलमानों और इस्लाम को उनसे बड़ा खतरा कोई नहीं पहुंचाता।'' बड़ा हैरान कर देने वाला ट्वीट था कि हमला पैरिस में होता है तब तो इनका उदारवादी चेहरा सामने आता है और जब हमला कश्मीरी पंडितों पर हो तो ये खामोश हो जाते हैं। खैर कहने का मतलब यह है कि आज कट्टरवादी मुस्लिम के पास कट्टरता की पूरी फौज है और उदारवादी मुस्लिम जगत के पास कुछ बयान व ट्वीट फिर भी मुस्लिम समुदाय को इस आधुनिक युग में समझना होगा कि शरियत कानून उस समय का सामाजिक कानून तो हो सकता है, किन्तु कोई दिव्य आदेश नहीं है। जिसे हर हाल में माना जाये आज हमारे पास लोकतांत्रिक प्रणाली है जिसमें भेदभाव न के बराबर है। अब संयम का खाका तैयार करना होगा सूफी समुदाय को इसका सर्वेक्षण करना चाहिए कि पुरातन धार्मिक पद्धति हथियारों के बल पर कब तक थोफी जाएगी? और चलो थोफ भी दी तो क्या गारंटी है कि इसके बाद शांति अमन का पैगाम आएगा? क्योंकि सबसे ज्यादा अशांति के शिकार तो मुस्लिम बहुल देश है। पूरे विश्व में धार्मिक आन्दोलन के रूप में चल रहे मदरसे जिनका काम विशेष मजहबी प्रणाली को जिन्दा रखना है वो सब कुरान को ईश्वरीय कृत ग्रन्थ मानते हैं। कहीं ऐसा तो नहीं इसी बात से आतंक की जड़ें जमना शुरू जाती हों? किसी भी संदर्भ या प्रसंग में मानव की, आज की जरूरतों को किनारे कर कुरान का हवाला देकर मानने को मजबूर किया जाता रहा है। पिछले सालों में देखें तो भारत से लेकर पकिस्तान, अफगानिस्तान, यूरोप, अरब देशों ने एक पवित्र कही जाने वाली पुस्तक के नाम पर लाखों लोगों के लहू से जल थल मरुस्थल नभ हर जगह को लाल किया है। क्या अब कोई मुझे शांति के धर्म का अर्थ परिभाषित करके समझा सकता है? **-सम्पादक**

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

उज्जैन कुम्भ और ईसाई मिशनरी - डॉ. विवेक आर्य

चर्च के इस कदम का मुख्य उद्देश्य तोड़ों और धर्म परिवर्तन करो की नीति हैं। ईसाई सदा से अनुसूचित जन-जातियों एवं दलितों को बरगला कर ईसाई बनाने की फिराक में रहते हैं। छुआछूत को समाप्त करने से ईसाईयों का यह प्रयास असफल होगा। धार्मिकता को अश्लीलता में बदलने का प्रयास किया जायेगा। वेद आदि धर्मशास्त्रों के अनुपम सन्देश को दरकिनार कर विदेशी मीडिया में कुंभ को अश्लील सिद्ध करने का प्रयास किया जायेगा। पहले नागा साधुओं के चित्रों को विदेशी अखबारों में एलियंस (दूसरे ग्रहों के विचित्र प्राणी) के रूप में चित्रित किया जायेगा। फिर कुम्भ मेले में उन्मुक्त सम्बन्ध जैसा व्यर्थ प्रलाप किया जायेगा।

उज्जैन में सिंहस्थ कुम्भ का आयोजन होने जा रहा है। भेड़ की खाल में भेड़िये के रूप में ईसाई मिशनरी इस अवसर पर हिन्दुओं को बरगलाने का प्रयास करेगी। मिशनरी किस प्रकार से कार्य करती है, यह जानने की अत्यन्त आवश्यकता है। हिन्दू समाज मिशनरी के कार्य करने के तरीकों से बहुत कुछ सीख सकता है। ईसाई समाज द्वारा विभिन्न प्रकार से वृत्तचित्र बनाकर, अलग-अलग शोध पत्र लिखकर, अनेक पुस्तकें लिखकर, अनेक परिचर्चा आदि के माध्यम से विश्व के समक्ष कुम्भ की नकारात्मक छवि बनाई जाएगी।

कुछ उदाहरणों के माध्यम से हम ईसाईयों के इस षड्यंत्र को समझने का प्रयास करते हैं।

1. विदेशी मिशनरी को हर हिन्दू उत्सव में पर्यावरण प्रदूषण दीखता है। जैसे दीवाली पर पटाखे और होली पर पानी की फिजूलखर्ची। वैसे ही कुम्भ के आयोजन में भी उन्हें पर्यावरण प्रदूषण दिखेगा। कुम्भ में होने वाले हजारों यज्ञों को पर्यावरण प्रदूषण से जोड़ा जायेगा। करोड़ों लोग एक स्थान पर एकत्र होंगे तो उनके मल-मूत्र से भूमि एवं जल प्रदूषण होगा। ऐसा दिखाया जायेगा। यह खेल पर्यावरण रक्षा करने वाली विभिन्न **NGO** के माध्यम से किया जायेगा।

समीक्षा- कुम्भ तो केवल एक माह चलेगा। विश्व में सबसे अधिक प्रदूषण मांसाहार से होता है। केवल शाकाहार अपनाने से सम्पूर्ण विश्व में भारी संख्या में प्रदूषण कम होगा। यज्ञ से पर्यावरण रक्षा पर किसी प्रकार का शोध नहीं किया जाता और अगर किया भी जाता हैं तो उसके परिणामों को आगे नहीं आने दिया जाता।

2. सुधार के नाम पर कुम्भ को महिला विरोधी दिखाया जायेगा। कुम्भ में महामंडलेश्वर पदों पर पुरुष पर्याप्त संख्या में रहते हैं। ऐसे में विदेशी NGO इसे भी नारी जाति पर अत्याचार, नारी के अधिकारों का दमन के रूप में प्रदर्शित करेंगे। हाल में होली पर होलिका जलाने को भी नारी जाति पर अत्याचार करने वाला दिखाया गया है।

समीक्षा- चर्च व्यवस्था में सम्पूर्ण महत्वपूर्ण पदों पर पुरुष विद्यमान है। बाइबिल आदि तो बहुत काल तक नारी को पुरुष की पसली से पैदा हुआ मानने के कारण नारी में रूह (आत्मा) का न होना तक मानते रहे हैं। यूरोप के इतिहास में लाखों नारियों को चुड़ैल कहकर अनेक यातनाएं देकर जिन्दा जला दिया गया। चर्च ने कभी इन कुत्यों पर क्षमा नहीं मांगी। सत्य है अपना घर किसी को दीखता नहीं औरों के यहाँ पर सबको कमी दिखती हैं।

3. कुम्भ को जातिवादी करार दिया जायेगा। ऐसा दिखाया जायेगा की कुम्भ मेले में आने वाले सभी महत्वपूर्ण पदों पर बैठे हुए लोग केवल ब्राह्मण हैं। अनुसूचित जन-जातियों एवं दलितों को कुम्भ में उचित प्रतिनिधित्व नहीं मिलता। महिषासुर को भी दलित करार देकर हिन्दुओं को अत्याचारी दिखाया जा रहा है।

समीक्षा- चर्च के इस कदम का मुख्य उद्देश्य तोड़ों और धर्म परिवर्तन करो की नीति हैं। ईसाई सदा से अनुसूचित जन-जातियों एवं दलितों को बरगला कर ईसाई बनाने की फिराक में रहते हैं। छुआछूत को समाप्त करने से ईसाईयों का यह प्रयास असफल होगा।

4. धार्मिकता को अश्लीलता में बदलने का प्रयास किया जायेगा। वेद आदि धर्मशास्त्रों के अनुपम सन्देश को दरकिनार कर विदेशी मीडिया में कुंभ को अश्लील सिद्ध करने का प्रयास किया जायेगा। पहले नागा साधुओं के चित्रों को विदेशी अखबारों में एलियंस (दूसरे ग्रहों के विचित्र प्राणी) के रूप में चित्रित किया जायेगा। फिर कुम्भ मेले में उन्मुक्त सम्बन्ध जैसा व्यर्थ प्रलाप किया जायेगा। उदहारण के लिए नासिक कुम्भ में Times of India अखबार में समाचार छपा था कि कुम्भ मेले के दौरान कंडोम की मांग कई गुना बढ़ गई। अंग्रेजी अखबारों में ऐसी खबरों को पढ़कर शिक्षित हिन्दू युवा कुम्भ मेले से या तो नफरत करने लगेगा अथवा भोगवादी हो जायेगा।

समीक्षा- ईसाई समाज को अपने भीतर चर्च में फैले योन शोषण, पादरियों द्वारा ननों से बलात्कार आदि कभी नहीं दीखते। अपनी शर्म छिपाने के लिए दूसरों को दोष देना ठीक नहीं हैं।

5. दुकानदारी और व्यवसाय। पाठक सोच रहे होंगे कि इस षड़यंत्र को करने के लिए विदेशियों के पास धन कहां से आता हैं चर्च के व्यवसायिक मंशा को समझने की हिन्दुओं को अत्यन्त आवश्यकता हैं। चर्च हर कार्य को प्रोफेशनल तरीके से करता हैं, पहले चर्च अपना धन बहुराष्ट्रीय कंपनियों में लगाता है। उदहारण के लिए **Church of England** का अरबों पौण्ड इन कंपनियों में लगा है। फिर उन्हीं बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भारत जैसे देशों में व्यवसाय करने हेतु भेज देता है। देश की अनेक कंपनियों में चर्च विदेश निवेश के नाम पर पैसा लगाता हैं। मीडिया ग्रुप्स में भी चर्च पैसा लगाकर उनसे अपने समर्थन में काम कराया जाता है। कुम्भ मेले के दौरान ट्रेवल एजेंसियों, उपभोक्ता केंद्रों आदि के माध्यम से वही से धन कमाता है और वही पर खर्च करता है। इस मंशा को समझने से हिन्दू समाज सम्पूर्ण विश्व में वेदों के सन्देश का प्रचार कर सकता है।

समीक्षा- स्वदेशी अपनाने से ईसाईयों के व्यापार की कमर सदा के लिए टूट सकती है। हिन्दुओं को भी इसी तरीकें से ईसाईयों को हिन्दू धर्म में दीक्षित करना चाहिए। स्वदेशी से विदेशी ताकतों का यह षड्यंत्र निश्चित रूप से असफल हो सकता है।

6. **सेवा प्रकल्प**- ईसाई लोग सेवा प्रकल्प के मुखोटे लगाकर कुम्भ में प्रचार करते हैं। जैसे बीमारों आदि के लिए चिकित्सा सुविधा मदर टेरेसा की मिशनरी ननें देंगी। उससे अपरिपक्व हिन्दू जनमानस के मन में इनके प्रति आदर और सम्मान भाव पनपता हैं। इसका दीर्घकालिक परिणाम यह निकलता है कि इनके ईसाई धर्मान्तरण जैसे कुकृत्यों पर हिन्दू समाज मौन धारण कर लेता हैं और अपने भाइयों को विधर्मी बनने देता हैं।

समीक्षा- हिन्दू संगठनों को अपने खुद के सेवा प्रकल्प खोलने चाहिए। ईसाईयों के सेवा की आड़ में किये गए धर्मांतरण के कुचक्र को सभी के सामने प्रकाशित करना चाहिए।

ऐसे अनेक सन्दर्भ हम यहाँ पर दे सकते हैं। जिनसे चर्च कुम्भ मेलों में अपना सुनियोजित षड्यंत्र कैसे चलाता है। पहले से सावधान होकर कार्य करने से इस सुनियोजित षड्यंत्र को नष्ट किया जा सकता है।

हिन्दू समाज को क्या करना चाहिए-

1. कुम्भ में वेद आदि धर्म शास्त्रों का प्रचार-प्रसार करना चाहिए।

2.शिवाजी, महाराणा प्रताप, बन्दा बैरागी, हरि सिंह नलवा जैसे महान क्षत्रियों, स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय सरीखे महान समाज सुधारकों, राम प्रसाद बिस्मिल, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, चन्द्र शेखर आजाद सरीखे महान क्रांतिकारियों के जीवन का कुम्भ मेलों में सिनेमा द्वारा मंचन होना चाहिए।

3. अखाड़ों के नागा साधुओं के माध्यम से शाही स्नान को लेकर वाद-विवाद जैसी बातों को पहले ही सुलझाया जाना चाहिए। उसके स्थान पर ठोस धर्म प्रचार को महत्व देना चाहिए।

4. मुसलमानों और ईसाईयों पर कुम्भ में कार्य करने पर नियंत्रण होना चाहिए। नि:स्वार्थ भाव से कार्य करने वालो को ही अनुमति होनी चाहिए।

5. हिन्दुओं को धार्मिक, सदाचारी बनने, संगठित होने एवं छुआछूत मिटाने का संकल्प दिलवाना चाहिए।

6. 1200 वर्षों में मुस्लिम आक्रांताओं द्वारा किये गए अत्याचारों से हिन्दुओं को परिचित करवाया जाना चाहिए।

7. गोवा जैसे प्रदेश में ईसाईयों द्वारा किये गए मतान्ध अत्याचार से हिन्दुओं को परिचित करवाया जाना चाहिए।

आप अपने विचार और अनुभव अवश्य लिखे। अच्छा लगे तो अग्रसित अवश्य कीजिये।

उज्जैन कुम्भ में वैदिक धर्म प्रचार हेतु जो भी युवा अपना सहयोग देना चाहते हैं मुझसे संपर्क करें।

-डॉ. विवेक आर्य,
मो. 9310679090

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्वावधान में वैदिक धर्म प्रचार समिति उज्जैन के सहयोग से
सिंहस्थ कुम्भ मेला 2016 के अवसर पर

वैदिक धर्म प्रचार शिविर एवं चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

21 अप्रैल से 21 मई 2016, स्थान: सिंहस्थ मेला, दत्त अखाड़ा क्षेत्र,
हनुमन्त बाग के सामने, बड़नगर मार्ग, उज्जैन (म.प्र.)

शिविर उद्घाटन 21 मई प्रात: 11 बजे

अध्यक्षता: सुरेश चन्द्र आर्य **उद्घाटनकर्त्ता:** महाशय धर्मपाल जी

शिविर में सेवा एवं सहयोग देने के लिए संपर्क करें-

आर्य लक्ष्मी नारायण पाटीदार, संयोजक (09827078880)

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का निर्वाचन सम्पन्न

श्री देवेन्द्र पाल वर्मा-प्रधान एवं स्वामी धर्मेश्वरानन्द पुनः मंत्री निर्वाचित

श्री देवेन्द्र पाल वर्मा

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

श्री अरविन्द कुमार

दिनांक 27 मार्च 2016 को लखनऊ में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का निर्वाचन सम्पन्न हुआ। निर्वाचन अधिकारी श्री विनोद कुमार सेवानिवृत्त जिला जज द्वारा निर्वाचन परिणाम घोषित किया गया, जिसमें सर्वश्री देवेन्द्र पाल वर्मा, प्रधान; स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, मंत्री; अरविन्द कुमार, कोषाध्यक्ष एवं रमाशंकर आर्य, पुस्तकाध्यक्ष के साथ पांच उपप्रधान, पांच उपमंत्री एक सहायक कोषाध्यक्ष, एक पुस्तकाध्यक्ष व अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य सर्वसम्मति से निर्विरोध निर्वाचित हुए। निर्वाचन परिणाम घोषण के उपरान्त निर्वाचन अधिकारी द्वारा निर्वाचित पदाधिकारियों को प्रमाण-पत्र सौंपा गया। **नव निर्वाचित समस्त अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सन्देश परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।**

आत्महत्या देखने का राजनैतिक आईना

पिछले दिनों रोहित वेमुला की आत्महत्या से जहाँ देश के राजनैतिक दल स्तब्ध होकर रोहित की आत्महत्या को लोकतंत्र की हत्या बता रहे थे, वहीं 25 मार्च को दिल्ली में डिफैन्स कॉलोनी के अन्दर इवेंट मैनेजर प्रियंका कपूर की आत्महत्या पर सब चुप हैं। महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाति मालीवाल भी इस आत्महत्या पर प्रतिक्रिया देने के बजाय इस मामले में उलझी हैं कि दिल्ली के स्कूलों में पढ़ रही सात लाख लड़कियों को सेनैट्री पैक दिए जायें या नहीं! जबकि प्रियंका के सुसाइड नोट चीख-चीखकर ये गवाही दे रहे हैं कि उसे खुदकुशी के लिए उसके पति ने ही मजबूर किया था। पुलिस को प्रियंका के कमरे से दो सुसाइड नोट मिले। जिनके जरिए पुलिस के लिए मामले के तह तक पहुंचना काफी हद तक आसान हो गया। उसने मन की पीड़ा को बयान करते हुए लिखा है कि पति और सास उसके साथ मारपीट करते थे। उसका पति काफी शक्की इंसान है। वह उसको किसी से मिलने जुलने और बातचीत तक करने नहीं देता था। बीती 30 जनवरी को उसने उसकी बुरी तरह पिटाई की थी।

प्रियंका सभ्य कहे जाने वाले इस समाज में अब नहीं रही। हम उसकी मौत का कोई विश्लेषण नहीं करना चाहते। पति द्वारा उसके सपनों की हत्या होना उसकी आत्महत्या का सच हो सकता है। किन्तु प्रियंका राजनीति से लेकर समाज की मानसिकता पर सवाल खड़े कर गयी, कि जब एक छात्र रोहित वेमुला की आत्महत्या से लोकतंत्र की हत्या हो जाती है तो पुरुषवादी विचारधारा से त्रस्त होकर जब कोई महिला आत्महत्या करती है तो क्या तब लोकतंत्र का जन्मदिन होता है? तब सभ्य समाज की हत्या क्यों नहीं होती? हम सबके लिए यह दुखद घटना है किन्तु सवाल यह नहीं है आत्महत्या क्यों की? चाहे वो रोहित वेमुला हो या प्रियंका कपूर या वो लोग जिनका अखबारों में नाम भी नहीं आता। सवाल यह है कि एक लोकतांत्रिक उदारवादी समाज के अन्दर एक नारी का लोकहित उसकी संवेदना उसका मर्म उसके अन्तस् की वेदना कोई क्यों नहीं समझता? और एक छात्र की आत्महत्या से उसकी जाति या सामाजिकता राजनेताओं से बचती क्यों नहीं हैं? इन दोनों आत्महत्या में तुलना करना आवश्यक है रोहित पर राजनेताओं की राजनीति चमकाने का कोई उत्तरदायित्व नहीं था। उसका उत्तरदायित्व था पढ़ लिखकर अपने माँ-बाप के सपने पूरे करना, राष्ट्रहित में अपना सहयोग देना उसकी आत्महत्या को बलिदान बताना मूर्खता है। हमारा सिर नतमस्तक होता यदि यह लोग मौत की बजाय जीवन संघर्ष करते।

कुछ भी हो मन में अब टीस यह है कि कोई भी समाज नारी शक्ति को उपेक्षित कर प्रगति नहीं कर सकता है। आज महिलाओं के लिए वो स्थान बयान नहीं कर सकता जहाँ वो सुरक्षित हों, घर के बाहर और घर के अंदर अपने संगे संबधियों के बीच, कार्यस्थल, में भी सुरक्षित नहीं है इसके कारण उन्हें घर से लेकर बाहर तक विरोध के ऐसे बवंडर का सामना करना पड़ता है, जिसका सामना अकेले करना उनके लिए कठिन हो जाता है और कई बार उसे मौत तक को गले लगाना पड़ता है। सामाजिक तौर पर महिलाओं को त्याग, सहनशीलता एवं शर्मीलेपन का प्रतिरूप बताया गया है। इसके भार से दबी महिलाएं चाहते हुए भी अपने लिए बने कानूनों का उपयोग नहीं कर पातीं। बहुत सारे मामलों में महिलाओं को पता ही नहीं होता कि उनके साथ जो घटनाएं हो रही हैं, उससे बचाव का कोई कानून भी है या नहीं! अभी पिछले दिनों मेट्रो ट्रेन में एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति भीड़ में एक लड़की को जबरन स्पर्श कर रहा था जिसका लड़की ने नजरों से विरोध किया लड़की को देखकर कुछ लोगों ने भी मौखिक रूप से विरोध किया तो वह अगले स्टेशन पर उतर गया किन्तु लड़की ने इस छेड़छाड़ को उसका

आज महिलाओं के लिए वो स्थान बयान नहीं कर सकता जहाँ वो सुरक्षित हों, घर के बाहर और घर के अंदर अपने संगे संबधियों के बीच, कार्यस्थल, में भी सुरक्षित नहीं है इसके कारण उन्हें घर से लेकर बाहर तक विरोध के ऐसे बवंडर का सामना करना पड़ता है, जिसका सामना अकेले करना उनके लिए कठिन हो जाता है और कई बार उसे मौत तक को गले लगाना पड़ता है। सामाजिक तौर पर महिलाओं को त्याग, सहनशीलता एवं शर्मीलेपन का प्रतिरूप बताया गया है। इसके भार से दबी महिलाएं चाहते हुए भी अपने लिए बने कानूनों का उपयोग नहीं कर पातीं। बहुत सारे मामलों में महिलाओं को पता ही नहीं होता कि उनके साथ जो घटनाएं हो रही हैं, उससे बचाव का कोई कानून भी है या नहीं।

बड़ा अपराध ना मानते हुए कहा कि इस प्रकार की घटना हमारे जीवन में आम हो गयी है जिसे हमने जीवन का हिस्सा समझ कर स्वीकार कर लिया है। हालाँकि यह सब उस देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है जिसमें नारी को देवी का दर्जा दिया जाता रहा हो।

आमतौर पर देखा जाये तो शारीरिक प्रताड़ना यानी मारपीट, जान से मारना आदि को ही हिंसा माना जाता है और इसके लिए रिपोर्ट भी दर्ज कराई जाती है; लेकिन महिलाओं और लड़कियों को यह नहीं पता कि मनपसंद कपड़े न पहनने देना, मनपसंद नौकरी या काम न करने देना, अपनी पसंद से खाना न खाने देना, बालिग व्यक्ति को अपनी पसंद से विवाह न करने देना या ताने देना, मनहूस आदि कहना, शक करना, मायके न जाने देना, पढ़ने न देना, काम छोड़ने का दबाव डालना, कहीं आने-जाने पर रोक लगाना आदि भी हिंसा है, मानसिक प्रताड़ना है। सरकार ने महिलाओं को पुरुषों के अत्याचार, हिंसा और अन्याय से बचाने के लिए राष्ट्रीय महिला आयोग का गठन तो किया, पर वह अपने मकसद में ज्यादा सफल नहीं हो पा रहा है। यह सिर्फ उन महिलाओं की सोसाईटी बनकर रह गया जिन्हें अपने अधिकारों के बारे में ज्ञान है। लेकिन गांवों की अनपढ़, कम पढ़ी-लिखी और दबी-कुचली महिलाओं की आवाज इस आयोग में नहीं सुनी जाती अभी तीन रोज पहले ही झारखण्ड के अन्दर एक महिला को डायन बताकर उसका सिर काट दिया गया, शायद महिला आयोग में बैठी महिलाओं को इस खबर का ज्ञान भी ना हो? अब कुछ भी हो, टी. एस. एलियट की एक कविता है जिसमें वे कहते है जीने की व्यवस्था में जीवन खो गया है। विवेक में ज्ञान खो गया और ज्ञान जानकारी में। अंत में वो कहते हैं कि लगातार बदलते दौर में जो एक चीज नहीं बदली वह है भलाई बुराई, आत्महत्या संघर्ष का हल नही होता न दु:ख का अंत जो दुनिया और कुरीतियों से लड़ते हैं वो ही विजेता कहलाते हैं।

-राजीव चौधरी

आर्य समाज बिड़ला लाइन्स का 142वां स्थापना दिवस

आर्य समाज बिड़ला लाइन्स का 142वां स्थापना दिवस 10 अप्रैल 2016 को मनाया जा रहा है। कार्यक्रम के अन्तर्गत यज्ञ एवं भजनों का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य कुंवर पाल शास्त्री जी होंगे एवं भजन श्री संजय आर्य (रानीबाग) प्रस्तुत करेंगे। **-सुधीर चन्द घई, मंत्री**

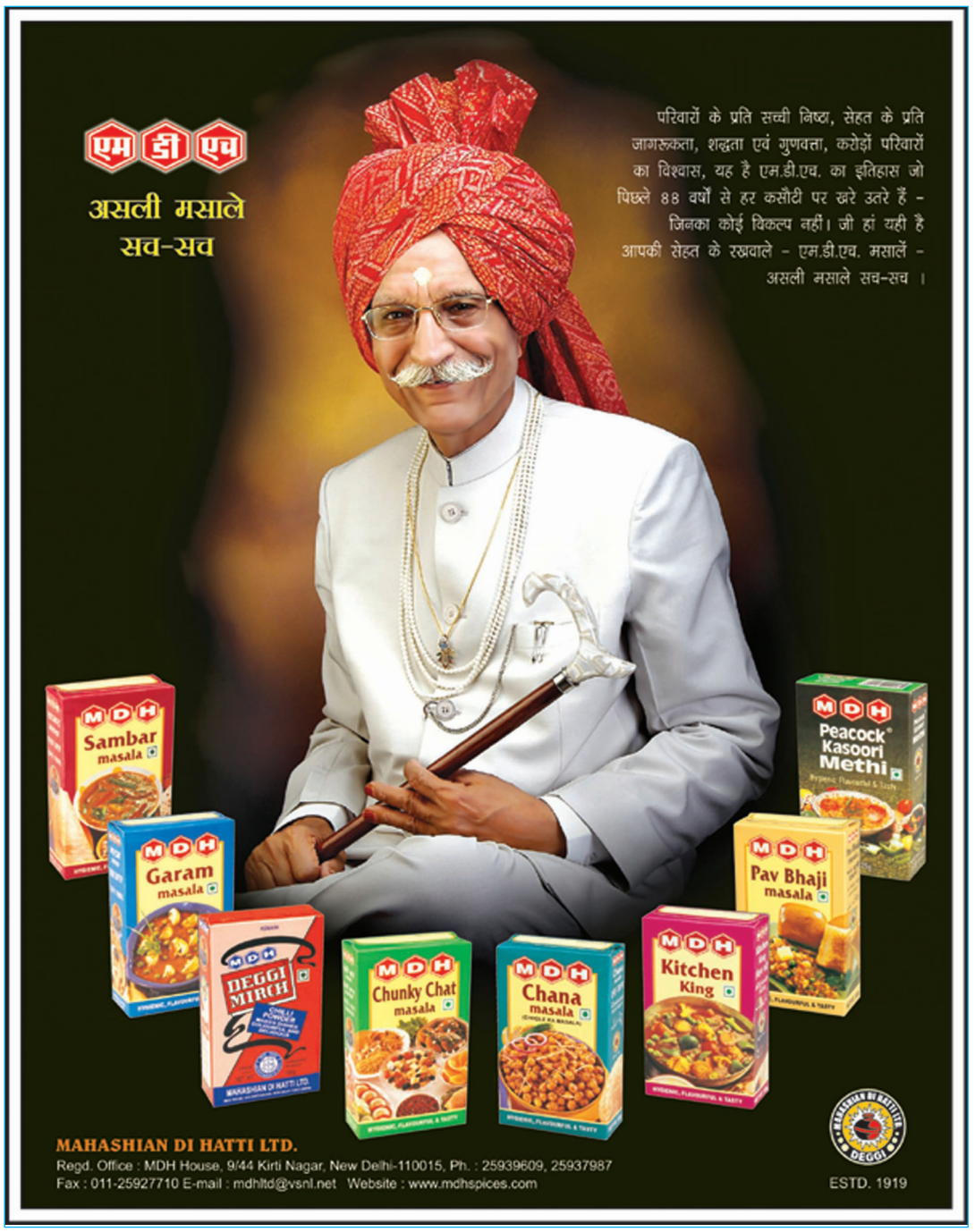

विद्यालयों के बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम

आर्य कन्या गुरुकुल
सैनिक विहार दिल्ली

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल
शादीखामपुर, नई दिल्ली

कु. नन्दिनी आर्या की प्रस्तुति
हर घर पर ओ३म् ध्वज

आर्य वैदिक पाठशाला
आर्यसमाज प्रीत विहार दिल्ली

अखिल भारतीय सेवा श्रम संघ की प्रस्तुति

शहीदी दिवस एवं लाला लाजपत राय जी की 150वीं जयंती के अवसर पर आर्य वीर दल कीर्ति नगर की प्रस्तुति

महर्षि दयानन्द पब्लिक सकूल,
आर्य समाज न्यू मोती नगर

आर्य वीर दल प्रीत विहार की प्रस्तुति

समारोह में बच्चों की जिज्ञासा एवं आकर्षण के केन्द्र रहे चालींचपलीन एवं लम्बू जी।

स्वागत समिति द्वारा किया गया आगन्तुक आर्यजनों का स्वागत

स्वागत के लिए रंगोली

सुप्रसिद्ध हास्य कवि डॉ. अर्जुन सिसोदिया

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 7 अप्रैल 2016/ 8 अप्रैल, 2016
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 6 अप्रैल, 2016

कार्यक्रम का शुभारंभ नवसस्येष्टी यज्ञ से हुआ

यज्ञ करते आर्यजन

यज्ञ ब्रह्मा नन्दिता शास्त्री एवं कन्या गुरुकुल वाराणसी की ब्रह्मचारिणीयां

श्रीमती ललतेश एवं श्री नरेश चन्द्र गुप्ता

श्रीमती नेहा एवं मोक्ष मेहतानी

श्रीमती श्रुति एवं श्री हिमांशु गोयल

श्रीमती प्रीतिका एवं श्री विवेक गुप्ता

श्रीमती रुचि एवं श्री सुधाकर आर्य

श्रीमती आकांक्षा एवं श्री प्रतीक साहू

श्रीमती सोनम एवं श्री आशुतोष आर्य

श्रीमती सीमा एवं श्री अभिषेक आर्य

होली की उमंग फूलों के संग

बच्चों ने एक दूसरे के चंदन का टीका लगाकर खूब मजे से खेली होली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन 23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com Web: www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह